चारों ऋण कैसे उतारें

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

कर्ज,बीमारी और मुकदमा से मनुष्य को दूर रहना चाहिए। कर्ज लेने से मूल और ब्याज बढ़ते–बढ़ते बहुत अधिक हो जाते हैं। उसको अदा करना बहुत मुश्किल होता है। बीमारी में केवल बीमार व्यक्ति ही परेशान नहीं होता बल्कि परिवार के अन्य सदस्य भी परेशान होते हैं। इसी प्रकार मुकदमें में भी धन का अनावश्यक व्यय होता है। इसलिए इन तीनों से दूर रहना चाहिए। सफेद कोट, खाकी कोट और काली कोट से बचकर रहना चाहिए। इन तीनों के चक्कर में पड़कर धन और समय का नुकसान होता है। यदि पैसा नहीं है तो दूसरों से ऋण लेकर कार्य करना पड़ता है।

देवऋण, गुरुऋण, पितृऋण और समाज ऋण को दूर कर जीवन से मुक्त हो जाना चाहिए। गृहस्थ धर्म के पालन में ये चारों ऋण भार स्वरूप रहते हैं। भारत एक आस्तिक देश है। इस देश में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जीवन को संचालित करने वाली शक्तियों के प्रति आस्था व्यक्त करने के लिए उनकी पूजा की जाती है। जीवन में दैवी शक्तियों का महत्वपूर्ण योगदान है। हमारे देश में चौंतीस करोड़ देवी–देवताओं की मान्यता है। प्राकृतिक शक्तियों को संचालित करने के लिए देवी–देवताओं की कल्पना की गयी है। वायुदेव, अग्निदेव, वरुणदेव, सूर्यदेव, चन्द्रदेव, जलदेव, पृथ्वीदेव, ब्रह्मदेव, विष्णुदेव, महादेव, वासुदेव, इन्द्रदेव इत्यादि देवों की पूजा हमारे देश में श्रद्धा के साथ की जाती है। मनुष्य अपने कार्यों के सम्पादन के लिए देवताओं का स्मरण करता है। हमारे देश में ऐसी मान्यता है कि देवता यदि प्रसन्न होते हैं तो कार्य निर्विघ्न समाप्त हो जाता है। इसीलिए देवताओं की पूजा की जाती है। यह परम्परा अनादिकालीन है। आज भी उसी रूप में चली आ रही है। मनुष्य का यह कर्तव्य है कि कृतज्ञता भाव ज्ञापित करने के लिए देवताओं के प्रति विनम्र बुद्धि से उनकी पूजा करें। इससे हम देवऋण से मुक्त हो जाते हैं।

भारत देश में गुरुओं, ऋषियों और महात्माओं के प्रति बहुत आदर सत्कार प्रदर्शित किया जाता है। गुरु शिष्य के अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर जीवन में ज्ञान का प्रकाश करता है। इसलिए गुरुओं का महत्व ईश्वर से भी अधिक है। वेद, उपनिषद् और गीता आदि ग्रन्थों में गुरु के महत्व को बतलाया गया है। गुरु ज्ञान प्रदान करता है। अज्ञान के कारण जीवन घोर संकट में पड़ जाता है। इस ऋण को दूर करने के लिए गुरुओं का सम्मान करना चाहिए। गुरुओं के बताये हुए मार्ग पर चलना चाहिए। सदाचार से जीवनयापन करना चाहिए। शरीर, मन और मकान को स्वच्छ रखना चाहिए। गुरु का पूजन करने के लिए अनेक मन्त्रों का प्रयोग शास्त्रों में बतलाया गया है–

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

हमारे देश में गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश के समान पूजनीय माना गया है। गुरु अज्ञान रूपी नेत्रों को खोलकर ज्ञान का प्रकाश फैलाता है। इसलिए गुरु प्रथम पूजनीय हैं। गुरु के प्रति उपनत बुद्धि से श्रद्धा भाव प्रकट करना चाहिए। इससे गुरु ऋण से मुक्ति मिलती है।

पितृऋण पूर्वजों के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए माना जाता है। पितृऋण कई तरह का होता है। हमारे कर्मों का, आत्मा का, पिता का, भाई का, बहिन का, मॉ का, पत्नि का और बेटे–बेटी का। आत्म ऋण का अर्थ है कि जब कोई नास्तिक और धर्म विरोधी कार्य करता है तो अगले जन्म में उस पर यह ऋण हो जाता है। इसके कारण घर में शान्ति भंग हो जाती है। इस ऋण से व्यापार, नौकरी कभी भी स्थाई नहीं रहती। जीवन में संघर्ष इतना बढ़ जाता है कि जीने की इच्छा खत्म हो जाती है। इस ऋण के कारण सर्वत्र असफलता ही प्राप्त होती है। इस ऋण को उतारने के लिए कुल परम्परा का पालन करना, पितृ पक्ष में तर्पण और श्राद्ध करना, सन्तान उत्पन्न करके उसमें धार्मिक संस्कार डालना। प्रतिदिन पितरों को प्रसन्न करने के लिए धार्मिक रीति–रिवाज से पूजा करना। अमावस्या और पूर्णिमा के दिन गुड़, घी की धूप देना, घर के वास्तु को ठीक करना और शुद्धता के साथ विनम्र भाव से पितरों को याद करना

चाहिए। ऐसा करने से पितर लोग प्रसन्न होते हैं उनकी प्रसन्नता से वंश वृद्धि होती है। परिवार में सुख शान्ति मिलती है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर उसे एक पहचान मिलती है। इस पहचान के कारण उसका चारित्रिक विकास होता है। समाज हमें बहुत कुछ देता है। इसलिए समाज के प्रति हमारा यह कर्तव्य है कि हम समाज के द्वारा दिये गये ऋण को उतारें। व्यक्ति समाज की एक छोटी सी इकाई है। व्यक्तियों से परिवार, परिवार से समाज और समाज से राष्ट्र का निर्माण होता है। परिवार में कई व्यक्ति एक साथ रहते हैं। परिवार व्यक्तियों को जोड़कर के रखता है। समाज में व्यक्ति आदान–प्रदान करता है। जिससे उसका सामाजिक जीवन सुखमय बीतता है। समाज में लोग एक–दूसरे की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। यदि व्यक्ति को अकेला छोड़ दिया जाये तो उसमें मानवीय गुण नहीं आ सकते। समाज हमें यह शिक्षा देता है कि परस्पर एक–दूसरे के साथ मिलकर रहें।